



Ajay Kumar

15 Aug 1996

12:42 PM

Kondagaon

Model: Gem-Report

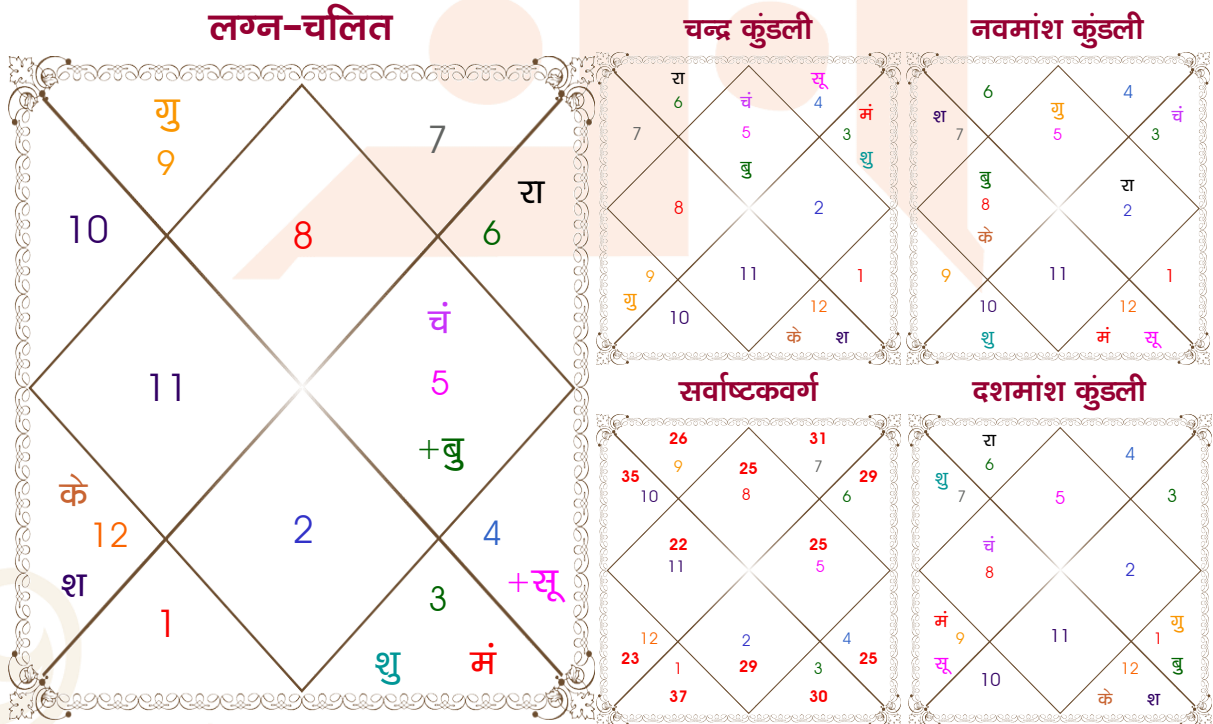
Order No: 120120301

तिथि 15/08/1996 समय 12:42:00 वार गुरुवार स्थान Kondagaon चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:40
अक्षांश 19:36:00 उत्तर रेखांश 81:40:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:03:20 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 10:14:34 घं	गण : राक्षस
वेलान्तर : 00:04:26 घं	योनि : मूषक
सूर्योदय : 05:43:51 घं	नाडी : अन्य
सूर्यास्त : 18:31:17 घं	वर्ण : क्षत्रिय
चैत्रादि संवत : 2053	वश्य : वनचर
शक संवत : 1918	वर्ग : मूषक
मास : श्रावण	रैजा : मध्य
पक्ष : शुक्ल	हंसक : अग्नि
तिथि : 1	जन्म नामाक्षर : मू-मुकेश
नक्षत्र : मघा	पाया(रा.-न.) : ताम्र-रजत
योग : परिध	होरा : शनि
करण : बव	चौघड़िया : लाभ

विंशोत्तरी	योगिनी
केतु 1वर्ष 10मा 24दि	भद्रिका 1वर्ष 4मा 9दि
चन्द्र	भामरी
10/07/2024	24/12/2024
11/07/2034	24/12/2028
चन्द्र 11/05/2025	भामरी 04/06/2025
मंगल 10/12/2025	भद्रिका 24/12/2025
राहु 10/06/2027	उल्का 25/08/2026
गुरु 09/10/2028	सिद्धा 05/06/2027
शनि 11/05/2030	संकटा 24/04/2028
बुध 10/10/2031	मंगला 04/06/2028
केतु 10/05/2032	पिंगला 24/08/2028
शुक्र 09/01/2034	धान्या 24/12/2028
सूर्य 11/07/2034	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:41:41	वृश्चि	अनुराधा	1	शनि	शनि	---	0:00			
सूर्य			28:55:23	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	मित्र राशि	1.87	आत्मा	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			09:42:39	सिंह	मघा	3	केतु	शनि	मित्र राशि	1.08	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			19:49:30	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	मंगल	शत्रु राशि	1.19	भातृ	भातृ	साधक
बुध			25:28:25	सिंह	पूर्वाषाढा	4	शुक्र	बुध	मित्र राशि	1.18	अमात्य	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		14:35:30	धनु	पूर्वाषाढा	1	शुक्र	शुक्र	स्वराशि	1.18	मातृ	धन	सम्पत
शुक्र			13:17:03	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	बुध	मित्र राशि	1.30	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि	व		12:58:07	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	राहु	सम राशि	1.22	ज्ञाति	आयु	मित्र
राहु	व		14:55:46	कन्या	हस्त	2	चंद्र	गुरु	मूलत्रिकोण	---		ज्ञान	क्षेम
केतु	व		14:55:46	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	मूलत्रिकोण	---		मोक्ष	मित्र

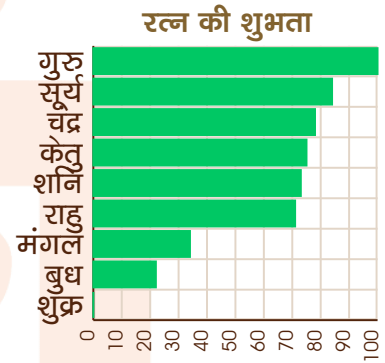


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धन, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	84%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	78%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	75%	सन्तति सुख, धन
नीलम	शनि	73%	सन्तति सुख, पराक्रम, सुख
गोमेद	राहु	71%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	34%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, रोग
पन्ना	बुध	22%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	11/07/1998	72%	66%	47%	22%	100%	0%	61%	58%	88%
शुक्र	11/07/2018	72%	66%	34%	34%	100%	0%	80%	77%	82%
सूर्य	10/07/2024	97%	84%	47%	22%	100%	0%	61%	58%	63%
चंद्र	11/07/2034	91%	91%	34%	34%	100%	0%	73%	58%	63%
मंगल	10/07/2041	91%	84%	55%	0%	100%	0%	73%	58%	82%
राहु	11/07/2059	72%	66%	9%	22%	100%	0%	80%	83%	63%
गुरु	11/07/2075	91%	84%	47%	0%	100%	0%	73%	71%	75%
शनि	11/07/2094	72%	66%	9%	34%	100%	0%	86%	77%	63%
बुध	12/07/2111	91%	66%	34%	47%	100%	0%	73%	71%	75%

Mahamaya Jyotish Karyalaya

Astrologer Suman Acharya
Professor colony Raipur CG
Member All India Federation Of Astrologers Society
9827401035
astrosumanpal1981@gmail.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पुखराज, माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज, माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी

दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृत्ति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। गुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते हैं। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते हैं। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेंगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते हैं।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। आजीविका क्षेत्र को प्रबल करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य सुख दे सकता है। रत्न शुभता से कार्यक्षेत्र में आपको उच्च सम्मानित पद, आधिकारिक शक्तियां, प्रशासनिक कुशलता की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको व्यवसाय में सफलता भी देगा। माणिक्य रत्न की शुभता से आपके अपने पिता से संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आप किसी सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हो सकते हैं। सरकारी विभागों से जुड़े कार्य रत्न शुभता से शीघ्र पूरे हो सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चमहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई हैं वो फिर से शुरू हो सकती हैं। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ सौमाय नमः

का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। लहसुनिया रत्न धारण कर आप वाहन सुखों में बढ़ोतरी कर सकते हैं। यह रत्न आपको तीर्थयात्रा एवं विदेश प्रवास देगा। रत्न की शुभता से आपके पराक्रम और नौकरी क्षेत्र में सफलता देगा। आपको अनेक सेवकों का सुख प्राप्त होगा। आप छल-कपट से दूर रहने का प्रयास करेंगे। केतु रत्न लहसुनिया आपको आंशिक धैर्यहीन बना सकता है। इसकी शुभता से आपके नकारात्मक विचारों का अंत होगा। सगे भाईयों से विवाद समाप्त होंगे।

केतु मीन राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी गुरु दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ

फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपके अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपत्ति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपत्ति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। यह गोमेद रत्न आपके जीवन के कष्टों को कम करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप परिश्रमी, विलासी और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। गोमेद रत्न प्रभाव से आप अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। आप बड़े स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। गोमेद की शुभता आपको धनवान और विभिन्न भोगों को भोगने वाला बनाएगी। आपकी मित्रता चतुर व्यक्तियों के साथ होगी। यह रत्न आपको धोखा और ठगी के माध्यम से धन अर्जन करने से रोकेगा।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी।

आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपका अपना ससुराल पक्ष से संबंध खराब हो सकते हैं। यह रत्न आपको बहुत अनुकूल परिणाम नहीं दे पाएगा। रत्न धारण करने पर शुभचिंतकों के द्वारा भी आपका भला नहीं हो पाएगा। रत्न धारण करने पर संभव है कि कानून नियमों के अन्तर्गत रहकर आप अपना जीवनयापन न कर पायें। मूंगा रत्न आपको गुदा संबंधित रोग दे सकता है। रत्न के कारण आपके शरीर में फोड़े फुंसी या घाव होने के योग भी बन सकते हैं। मूंगा धारण करने पर आपको दुर्घटनाओं, आग और चोरी की वजह से धन हानि हो सकती है। यह रत्न आपको वाणी में कड़वाहट दे सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। षष्ठेश मंगल का रत्न मूंगा आपको रक्तविकारी और हठी बना सकता है। यह रत्न आपको कृपण एवं स्वाधी बना सकता है। छ्ठ भाव रोग, ऋण और शत्रुओं का भाव है। इस भाव के स्वामी का रत्न धारण करने पर आपको इन विषयों से संबंधित कष्ट प्राप्त हो सकते हैं। मंगल रत्न मूंगा आपको शारीरिक रूप से कमजोर, आलस्य और रोगी बना सकता है। मूंगा रत्न पहनने के बाद आपके शत्रु शक्तिशाली होंगे। इस कारण आपको विरोधियों को शांत रखने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। यह रत्न आपको समाज में सम्मान और आदर की कमी देगा। मातृ पक्ष से आपको हानि हो सकती है। भूमि, भवन एवं वाहन कष्ट प्राप्त हो सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको उत्तम कार्य करने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों का साथ न मिल पाने के कारण आपके कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपकी सामाजिक भावना में कमी कर सकता है। आपके अत्यधिक व्यवहारिक होने से आपमें संवेदनशीलता की कमी हो सकती है। धैर्य और विनम्रता की कमी भी आपमें दृष्टिगोचर हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में निर्णय लेने में आप

दुविधा की स्थिति का अनुभव हो सकता है। आर्थिक रूप से स्थिरता प्राप्त करने में बौद्धिक योग्यता का सहयोग नहीं मिल पाएगा। परिस्थितियों के अनुसार बातचीत का कौशल आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पन्ना रत्न प्रभाव से मध्यस्थता का कार्य करना आपको दिक्कत दे सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते हैं। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्ति को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्ति में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा पहनने पर आपके कार्यों में कठिनाईयां आ सकती हैं। यह रत्न आपको वाहन सुख, भोग विलास और सौंदर्यप्रसाधन विषयों की प्राप्ति में परेशानियां दे सकता है। हीरा रत्न धन व ऋण सुख की हानि कर सकता है। बनते कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं। आप व्यर्थ में घूमने फिरने और वाद-विवाद के आदी हो सकते हैं। यह रत्न आपको वाहनों से शारीरिक कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से विपरीत लिंग विषयों के कारण आपको मान-हानि का सामना करना पड़ सकता है। गुप्त संबंध भी रत्न प्रभाव से बन सकते हैं।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते हैं। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(10/07/2024 - 11/07/2034)

चन्द्र की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(11/07/2034 - 10/07/2041)

मंगल की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(10/07/2041 - 11/07/2059)

राहु की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, मूंगा व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(11/07/2059 - 11/07/2075)

गुरु की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(11/07/2075 - 11/07/2094)

शनि की दशा में आपका पुखराज, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और मूंगा व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(11/07/2094 - 12/07/2111)

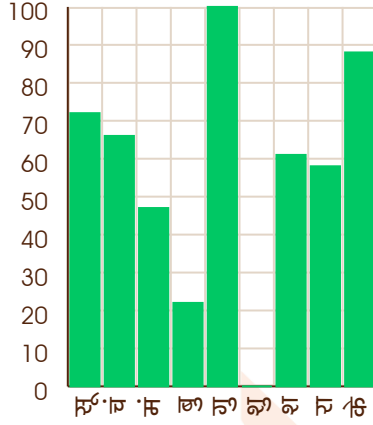
बुध की दशा में आपका पुखराज, माणिक्य व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

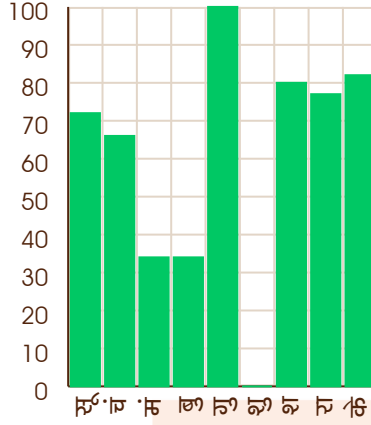
पन्ना व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

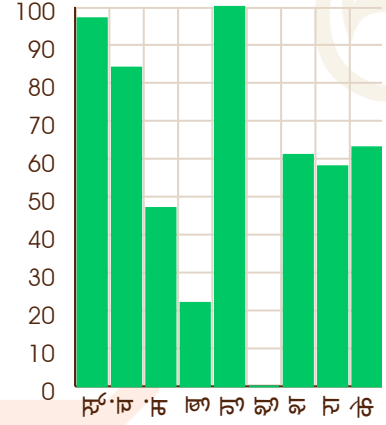
केतु - 11/07/1998



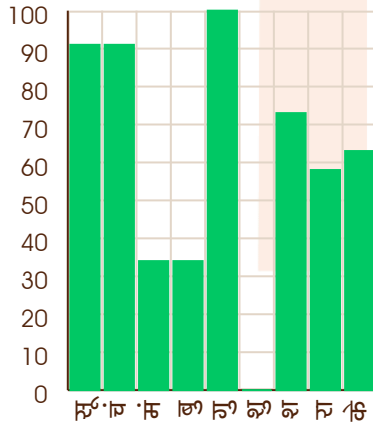
शुक्र - 11/07/2018



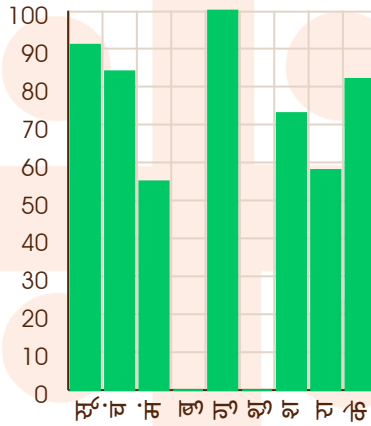
सूर्य - 10/07/2024



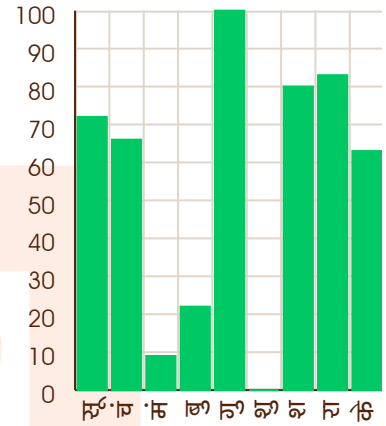
चन्द्र - 11/07/2034



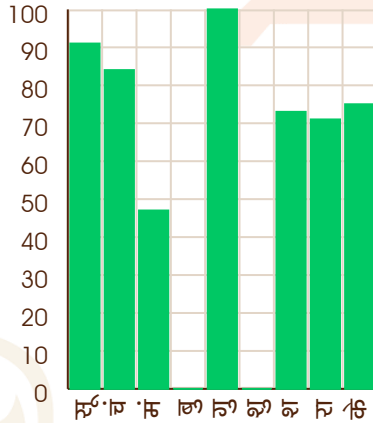
मंगल - 10/07/2041



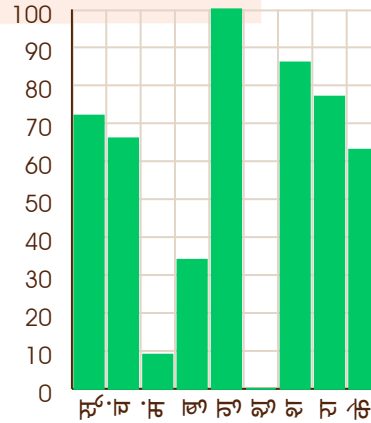
राहु - 11/07/2059



गुरु - 11/07/2075



शनि - 11/07/2094



बुध - 12/07/2111

